अग्नियों के नाम एवं कर्मविशेष में आवाहन

अग्नियों के नाम एवं कर्मविशेष में आवाहन

आचार्य पं० धीरेन्द्र मनीषी
प्राध्यापक: हरिश्चंद्र स्नातकोत्तर महाविद्यालय, वाराणसी। निदेशक: काशिका ज्योतिष अनुसंधान केंद्र।
मो0- 9450209581/ 8840966024

प्रयोगरत्न तथा सङ्ग्रह में कहा गया है- १. प्रथम अग्नि लौकिक अग्नि है, जिसे पावक कहते हैं। २. द्वितीय अग्नि 'मारुत' है, जिसका प्रयोग गभार्धान संस्कार में होता है। ३. पुंसवन संस्कार में पावमान नामक अग्नि का प्रयोग किया जाता है। ४. सीमन्त संस्कार में 'मंगल' अग्नि तथा ५. जातकर्म में 'प्रवल' नामक अग्नि को लेना चाहिये । ६. नामकरण संस्कार में 'पार्थिव' अग्नि, ७. अन्नप्राशन में 'शुचि', ८. चौलकर्म में 'सभ्य', ९. व्रतबन्ध में 'समुद्भव' नामक अग्नि प्रयुक्त होती है। १०. गोदान में 'सूर्य', ११. विवाह में 'योजक', १२. आवसथ्य (घर में रखी हुई) अग्नि को 'द्विज' कहते हैं । १३. वैश्वदेव कर्म में 'रुक्मक' नामक अग्नि हो जाती है। १४. प्रायश्चित्त कर्म में 'विट', १५. पाकयज्ञ में 'पावक', १६. देवताओं में 'हव्यवाह', १७. पितृकर्म में 'कव्यवाह', १८. शान्तिकर्म में 'वरद', १९. पौष्टिक कर्म में 'बलवर्धन' तथा २०. पूणार्हुति में अग्नि का नाम 'मृड्' हो जाता है। २१. अभिचार कर्म की अग्नि 'क्रोधाग्नि' होती है । २२. वश्यकर्म की अग्नि 'कामद' कहलाती है। २३. वन जलाने वाली अग्नि को 'दूषक', २४. उदर की अग्नि 'जठराग्नि', २५. चिता की अग्नि 'क्रव्याद', २६. लक्षहोम में 'वह्नि', २७. कोटिहोम में 'हुताशन', २८. वृषोत्सर्ग में 'अध्वर', २९. शुचिकर्म में 'ब्राह्मण', ३०. समुद्र में 'वड़वाग्नि', ३१. क्षय में 'संवर्तक'- ये अग्नि के विभिन्न कर्मों के अनुसार नाम हैं। ब्रह्माजी के लिये गार्हपत्य अग्नि, श्रीविष्णु जी के लिये आहवनीय तथा श्री ईश्वर (शिव) के लिये दक्षिणाग्नि-ये तीन प्रकार की अग्नियाँ देवानुसार हैं। इस प्रकार अग्नियों के नामों को जानकर कर्म करना चाहिये।

अग्नि के विभिन्न कर्मों के अनुसार नाम हैं। ब्रह्माजी के लिये गार्हपत्य अग्नि, श्रीविष्णु जी के लिये आहवनीय तथा श्री ईश्वर (शिव) के लिये दक्षिणाग्नि-ये तीन प्रकार की अग्नियाँ देवानुसार हैं। इस प्रकार अग्नियों के नामों को जानकर कर्म करना चाहिये।